सक नाहीं हौज ताल की, इत बोहोत मोहोल बुजरक।
बिरिख पानी ताल पाल के, सब पाट घाट बेसक।। ३४ ।।

हौज-कौसर तालाब में और सुन्दर टापू महल में, तालाब और टापू के चारों ओर के वृक्षों में, हौज-कौसर के पानी और हीरे की पाल में और जमुनाजी के पाट-घाट में कोई संशय नहीं रहा।

बेसक बड़े अर्स की, क्यों कहूं बड़ी मोहोलात।
बाग बड़ा गिरदवाए का, इन जुबां कह्या न जात।। ३५ ।।

परमधाम के बड़े विशाल महलों और बड़े-बड़े सुन्दर बगीचे जो चारों तरफ आए हैं, जिनका वर्णन इस जबान से करना सम्भव नहीं है उन सबके बारे में भी कोई संशय बाकी नहीं है।

इत सक मोहे जरा नहीं, बन गलियों पसु खेलत।
गिरदवाए गून्जे अर्स के, कई विध जिकर करत।। ३६ ।।

वन की गलियों में पशु तरह-तरह के खेल करते हैं और परमधाम के चारों तरफ उनकी मधुर ध्वनि आती है। वह कई तरह से 'राज-राज', 'धनी-धनी' का जिक्र करते हैं। इसमें भी किसी प्रकार का संशय नहीं है।

यों केती कहूं बेसकी, इनका नहीं हिसाब।
महामत देखावे हक इस्क, जो साकी पिलावे सराब।। ३७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं ऐसा ज्ञान जिसके प्रति तारतम वाणी से बेशकी हो गई और जो बेहिसाब हैं उसका वर्णन कहां तक करूं? अब मैं श्री राजजी महाराज जो इश्क की शराब पिला रहे हैं और अपना इश्क दिखा रहे हैं, उसका थोड़ा सा वर्णन करती हूं।

|| प्रकरण || ७ || चौपाई || ३४२ ||

सराब सुख लज्जत

नोट—शराब इश्क है। साकी अक्षरातीत पारब्रह्म हैं। पीने वाले मोमिन हैं। सुराही श्री राजजी का दिल है। प्याला मोमिनों की आंखें हैं।

साकी पिलावे सराब, रूहें प्याले लीजिए।
हक इस्क का आब, भर भर प्याले पीजिए।। १ ।।

श्री राजजी महाराज रूहों को इश्क की शराब पिला रहे हैं। हे परमधाम की आत्माओ! श्री राजजी महाराज के इश्क की शराब अपनी नजरों के प्याले से भर-भरकर पिओ।

हक आसिक रूहन का, इन इस्क का आब जे।
इन आब में जो स्वाद है, ए रस जानें पीवन वाले।। २ ।।

श्री राजजी महाराज रूहों के आशिक हैं और इनके इश्क की शराब में जो लज्जत है वह पीने वाले मोमिन ही जानते हैं।

नहीं हिसाब इस्क का, स्वाद को नाहीं हिसाब।
हिसाब ना तरंग अमल के, ए जो आवत साकी के सराब।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज का इश्क बेशुमार है और इश्क का स्वाद भी बेशुमार है। पीने वालों की मस्ती की तरंगें भी बेशुमार हैं, जो श्री राजजी महाराज के इश्क की शराब से आती हैं।

Nijanand App

कई रस इन सराब में, ए जो पिलावत सुभान।
मस्ती पिलावत कायम, मेहेर कर मेहेरबान।। ४ ।।

श्री राजजी महाराज जो इश्क की शराब पिला रहे हैं उसमें कई तरह के आनन्द भरे पड़े हैं। सुभान श्री राजजी महाराज मेहर करके अखण्ड मस्ती की शराब पिलाते हैं।

रूहें नींद से जगाए के, पिलावत प्याले फूल।
मुंह पकड़ तालू रूह के, देत कायम सुख सनकूल।। ५ ।।

रूहों को नींद से जगाकर मुंह पकड़ कर रूह के तालु में इश्क के प्याले भर-भरकर अखण्ड सुख देने वाले प्रसन्न होकर पिला रहे हैं।

ए प्याले कर मेहेरबानगी, कई रूहों पिलावत।
सुख देने बका नजीक का, प्यार कर निसबत।। ६ ।।

श्री राजजी महाराज ऐसी मेहरबानी करके कई तरह से रूहों को प्यार करके तथा अपनी अंगना जानकर अखण्ड सुख देने के लिए भर-भर प्याले पिलाते हैं।

कई विध मेहेर करत हैं, मासूक जो मेहेरबान।
उलट आप आसिक हुआ, जो वाहेदत में सुभान।। ७ ।।

हमारे माशूक श्री राजजी महाराज कई तरह से कृपा करते हैं। परमधाम की एकदिली में जो हमारे माशूक हैं वह यहां मोमिनों को अपने हाथ से इश्क पिलाने के कारण ही आशिक कहलाते हैं।

रूहों के दिल कछू ना हुता, कछू कहें न मांगें हक से।
ना कछू चित में चितवन, ना मुतलक रूहों मन में।। ८ ।।

हमारे दिल में ऐसा कुछ नहीं था और न कुछ श्री राजजी से मांगा था और न चित्त में कोई चाह थी। हम रूहों के मन में कुछ नहीं था।

आस बंधाई हुकमें, हुकमें कराई उमेद।
आप इस्क की बुजरकी, कर मेहेर देखाए कई भेद।। ९ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम ने हमें आशा बंधवा दी और हुकम ने ही हमारी चाहना पूरी कराई। श्री राजजी महाराज के इश्क की महानता और मेहर के रहस्य खोल दिए।

यों कई सुख दिए इस्क के, कई सुख दिए जो मेहेर।
कई सुख अपनी बड़ाई के, जासों और लगे सब जेहेर।। १० ।।

इस तरह से कई सुख इश्क के, मेहर के तथा अपनी महानता के दिए। जिससे सारी दुनियां हमें जहर के समान लगने लगी।

कई सुख दिए अर्स के, कई सुख दिए निसबत।
कई सुख दिए इलम के, बेसक जो नसीहत।। ११ ।।

परमधाम के कई सुख दिए। अंगना होने के कई सुख दिए। तारतम वाणी से कई नसीहतें दीं। कई इलम के सुख दिए, जिससे मेरे संशय मिट गए।

Nijanand App

कई सुख दिए रूहन में, ए मेला बैठा विध जिन।
हक ऊपर आप बैठके, सुख देवें सबन।। १२ ।।

परमधाम में रूहें मिलकर कैसे बैठी हैं और श्री राजजी महाराज सिंहासन पर बैठकर सबको कई तरह से सुख दे रहे हैं।

सुख दिए अर्स जिमीय के, सुख दिए जल जोए।
सुख दिए मोहोलात के, सब जरी किनारे सोए।। १३ ।।

परमधाम की जमीन के, जमुनाजी के जल के, जल के किनारे बने महलों के तथा जमुनाजी के जवाहरातों जड़े किनारों के सुख दिए।

सुख दिए जल ताल के, सुख ताल कई विवेक।
कोट जुबां ना केहे सके, तो कहा कहे रसना एक।। १४ ।।

हौज-कौसर तालाब के जल की तथा ताल की और कई शोभा के सुख करोड़ों जबान नहीं कह सकतीं तो मेरी एक जबान कैसे कहे?

सुख दिए मोहोल नूर के, सुख बाग नूर गिरदवाए।
ए समूह मोहोल सुख कैसे कहूं, इन जुबां कहे न जाए।। १५ ।।

रंग महल के तेज के सुख दिए। उसके चारों तरफ बगीचों की सुन्दरता के सुख दिए। इन सम्पूर्ण महलों के सुख कैसे कहूं? इस जबान से कहे नहीं जाते।

कई सुख बड़े अर्स के, बन गिरद मोहोलात।
ए कायम सुख हक अर्स के, सुख हमेसा दिन रात।। १६ ।।

परमधाम के चारों तरफ वनों के महलों के सुख जो सदा अखण्ड हैं, कहां तक वर्णन करूं? यह सुख परमधाम में श्री राजजी महाराज हमें दिन-रात देते हैं।

कई सुख जोए बाग के, कई सुख कुंज गलियन।
कई सुख पसु पंखियन के, मुख बानी मीठी बोलन।। १७ ।।

जमुनाजी के बगीचों के, कुंज-निकुंज की गलियों के, पशु-पक्षियों के जो अपने मुख से मीठी वाणी बोलते हैं, के सुखों का वर्णन कहां तक करूं?

ए खेलौने सुख हक के, ए सुख दिए रूहन।
खूबी इनके परन की, आकास न माए रोसन।। १८ ।।

यह सब श्री राजजी महाराज के खिलौने हैं। जिनके सुख सदा रूहों को देते हैं। इन पक्षियों के परों की खूबी आकाश में नहीं समाती। उसका वर्णन कैसे करूं?

देखी कायम साहेबी हक की, जिनका नहीं सुमार।
इन नासूत में बैठाए के, सुख देखाए नूर के पार।। १९ ।।

श्री राजजी महाराज की अखण्ड परमधाम की साहेबी जो बेशुमार है, उसे मैंने देखा। इस मृत्युलोक में हमें बिठाकर अक्षर के पार परमधाम के सुख दिखाए।

Nijanand App

कई सुख दिए लैलत कदर में, जो अव्वल दो तकरार।
सुख दिए फजर तीसरे, कई सुख परवरदिगार।। २० ।।

लैल-तुल-कदर की रात्रि के पहले दो हिस्सों में बृज और रास में कई तरह के सुख दिए। सवेरे के तीसरे भाग में जागनी के ब्रह्माण्ड में तारतम वाणी से जागृत कर श्री राजजी महाराज कई तरह से सुख देते हैं।

कई सुख दिए निसबत कर, ए झूठा तन कर यार।
क्यों कहूं सुख मेहेबूब के, जाके कायम सुख अपार।। २१ ।।

परमधाम की निसबत से हमारे झूठे तनों को भी अपनी अंगना बनाकर लाड़ले मेहबूब ने कई तरह से बेशुमार अखण्ड सुख दिए।

और सुख सब मेयराज में, केते कहूं जुबान।
जुदी जुदी जंजीरों, लिखे मांहें फुरमान।। २२ ।।

जो सुख आपने रसूल साहब की मेयराज (दर्शन की रात्रि) में दिए उसका बयान इस जबान से कैसे करूं? वह सुख कुरान के अलग-अलग सिपारों में अलग-अलग आयतों में लिखे हैं।

हकें कह्या उतरते, तुम जात बीच नासूत।
आप वतन जिन भूलो मोहे, मैं बैठा बीच लाहूत।। २३ ।।

श्री राजजी महाराज ने खेल में उतरते समय कहा कि हे सखियो! तुम मृत्युलोक में खेल देखने जा रही हो। तुम अपने आपको, घर को तथा मुझे मत भुला देना। मैं यहां परमधाम में बैठा हूं।

तब फेर कह्या अरवाहों ने, हम क्यों भूलें तुमको।
तुम पेहेले किए चेतन, खेल कहा करे हमको।। २४ ।।

तब फिर रूहों ने जवाब दिया कि हम आपको कैसे भूलेंगे? आपने तो हमें पहले से ही सावधान कर दिया है। यह खेल हमारा क्या बिगाड़ेगा?

ए बातें बीच अर्स के, अव्वल जो मजकूर।
सो याद देने लिखी रमूजें, जो हुई हक हजूर।। २५ ।।

यह बातें परमधाम में शुरू में श्री राजजी के सामने हुईं। उनको याद दिलाने के वास्ते ही छिपी बातें लिखी हैं।

बैठाए बीच नासूत के, हम पर भेज्या फुरमान।
उनमें लिखी इसारतें, वाहेदत के सुभान।। २६ ।।

हमें मृत्युलोक में बिठाकर हमारे पास कुरान भेज दिया। उसमें हमारी और श्री राजजी महाराज की एकदिली की सारी बातें लिखी हैं।

मोमिन मेरे अहेल हैं, हकें लिख्या माहें कुरान।
खोल इसारतें रमूजें, इनों जरे जरा पेहेचान।। २७ ।।

कुरान में लिखा है कि मोमिन मेरे वारिस हैं। कुरान के छिपे भेदों के रहस्य यह मोमिन ही खोलेंगे क्योंकि इनको परमधाम के जर्रे-जर्रे की जानकारी है।

Nijanand App

और जिन छुओ कुरान को, यों हकें लिखी हकीकत।
वाको नापाकी ना टरे, बिना तौहीद मदत।। २८ ।।

मोमिनों के अतिरिक्त कुरान को छूने को मना किया है, क्योंकि बिना श्री राजजी महाराज की मेहर के जीवसृष्टि की नापाकी (अपवित्रता) नहीं छूटेगी, अर्थात् उनके संशय नहीं मिटेंगे। ऐसी हकीकत कुरान में लिखी है।

सो मदत तौहीद की, पाइए ना मोमिनों बिन।
ए दुनियां को चाहें नहीं, जाको हक बका रोसन।। २९ ।।

श्री राजजी महाराज की कृपा मोमिनों के बिना किसी को नहीं मिलती। इन मोमिनों को दुनियां की चाह नहीं होती क्योंकि इनके पास श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से पहचान है।

सो पाक मोमिन कहे, जिन लिया हकीकी दीन।
सो हक बिना कछू न रखें, ऐसा इनका आकीन।। ३० ।।

हक के इस दीन (निजानन्द सम्प्रदाय) को मानने वाले ही मोमिन हैं। ब्रह्मसृष्टि हैं। जिनको पाक कहा है। इनका इतना पक्का यकीन है कि पारब्रह्म के सिवाय अपने दिल में किसी की चाह नहीं रखते।

हकीकत मारफत के, इनको खुले द्वार।
उतरे नूर बिलंद से, याको वतन नूर के पार।। ३१ ।।

हकीकत और मारफत के ज्ञान के रहस्यों को यही समझते हैं। यही परमधाम से उतरे हैं। इनका ही घर अक्षर के पार परमधाम है।

जहां जबराईल जाए न सक्या, रह्या नूर-मकान।
पर जलावे नूरतजल्ली, चढ़ सक्या न चौथे आसमान।। ३२ ।।

जबराईल जहां नहीं जा सका, अक्षर धाम तक ही रह गया। अक्षरातीत के तेज को जबराईल सहन नहीं कर सका और चौथे आसमान (लाहूत) में नहीं पहुंच सका।

जित हक हादी रूहें, अर्स अजीम का नूर।
कौल किया रूहोंसों हकें, सो महंमद मसी ल्याए मजकूर।। ३३ ।।

जहां श्री राजजी महाराज, श्यामा महारानी और रूहें अर्श अजीम में विराजमान हैं, जहां पर श्री राजजी महाराज ने रूहों से वायदे किए थे, उस हकीकत को श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) और मुहम्मद साहब ने लाकर जाहिर किया।

और हुज्जत न रखी किनकी, चौदे तबक की जहान।
मोमिनों ऊपर अहमद, ल्याया एह फुरमान।। ३४ ।।

चौदह तबकों की दुनियां में से किसी का मोमिनों के समान यकीन नहीं है (हुज्जत नहीं है)। मोमिनों के वास्ते ही श्री श्यामाजी महारानी यह वाणी लेकर आई हैं।

ए नाबूद वजूद जो नासूती, अर्स उमत धरे आकार।
लिख्या हकें कुरान में, ए तन मेरे यार।। ३५ ।।

परमधाम की ब्रह्मसृष्टियों ने इस संसार में जो मिटने वाले तन धारण किए हैं, श्री राजजी ने कुरान में लिखा है कि वह मेरे दोस्त (यार) हैं।

Nijanand App

यों हकें लिख्या कुरान में, ए अरवाहें मेरे अहेल।
ए झूठे वजूद जो खाक के, निपट गंदे सेहेल।। ३६ ।।

कुरान में श्री राजजी महाराज ने यह भी लिखा है कि यह ब्रह्मसृष्टियां मेरे वारिस हैं। बाकी संसार के झूठे जीव बिल्कुल नापाक हैं।

औलिया लिल्ला दोस्त कर, नूर जमाल लिखत।
ऐसे निजस तन नासूती, कहे यासों मेरी निसबत।। ३७ ।।

श्री राजजी महाराज ने मोमिनों को कुरान में ज्ञानी और अपने प्यारे आशिक कहा है। इन्होंने जो झूठे तन धारण कर रखे हैं, उनसे मेरा सम्बन्ध है, क्योंकि इन तनों में मेरे मोमिनों की आत्मा बैठी है।

कहे नूर-जमाल कुरान में, छोड़ के एह अंधेर।
एक साद करो मुझको, मैं तुमें जी जी कहूं दस बेर।। ३८ ।।

कुरान में पारब्रह्म श्री राजजी महाराज लिखते हैं कि हे मोमिनो! तुम इस झूठे संसार को छोड़कर मुझे एक बार रिझा लो तो मैं दस बार 'हां जी', 'हां जी', कहकर खुश करूंगा।

यों हकें लिख्या कुरान में, हक रूहों की करें जिकर।
पीछे आपन करत हैं, रूहें क्यों न देखो दिल धर।। ३९ ।।

कुरान में लिखा है कि श्री राजजी महाराज हमेशा रूहों की ही बातें करते हैं। उसके बाद ही हम श्री राजजी को याद करते हैं। इस बात को दिल से विचारकर क्यों नहीं देखते हो?

हकें लिख्या कुरान में, पेहेले मेरा प्यार।
जो तुम पीछे दोस्ती करो, तो भी मेरे सच्चे यार।। ४० ।।

श्री राजजी महाराज ने कुरान में लिखा है, हे मोमिनो! पहले मैं प्यार करूंगा। उसके बाद यदि उस प्यार को तुम सच्चे दिल से निभा डालोगे तो भी मेरे सच्चे दोस्त होगे।

रूहें सुनो एक मैं कहूं, जो हकें करी मुझसों।
पड़ी थी जल अंधेर में, कोई थाह न थी इनमों।। ४१ ।।

श्री महामति जी कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी! सुनो श्री राजजी महाराज ने मेरे ऊपर कृपा की। मैं माया के जंजाल में फंसी थी जिसका कोई शुमार नहीं था, अर्थात् निकलने का कोई रास्ता नहीं था।

भवसागर जीवन को, किन पाया नाहीं पार।
दुख रूपी अति मोहजल, माहें धखत जीव संसार।। ४२ ।।

भवसागर के जीवों ने इस मोहसागर का पार नहीं पाया। यह दुःख का ही मोह माया-जाल है जिसमें सारे जीव दुःखी होकर जल रहे हैं।

लेहेरी उठे अंधेर की, पहाड़ जैसी बेर बेर।
ऊपर तले लग भमरियां, जीव पड़े फेर माहें फेर।। ४३ ।।

यहां पहाड़ के समान बड़ी-बड़ी माया की मजबूरियां आती हैं और ऊपर से नीचे तक चक्कर ही चक्कर है जिसमें जीव घूमता रहता है।

Nijanand App

निपट अंधेरी ला ए की, सिर ना सूझे हाथ पाए।
टापू पहाड़ों बीच में, सब बंधे गोते खाए।।४४।।

यह मिटने वाला संसार निश्चित ही अज्ञान के अन्धकार से भरा है। इसमें अपना सिर, हाथ और पैर दिखाई नहीं देते, अर्थात् अपनी भी पहचान नहीं है। इस भवसागर में पहाड़ जैसे टापू हैं। सब मोह माया के बन्धन में बंधकर गोते खाते हैं।

मगर मच्छ माहें बुजरक, वजूद बड़े विक्राल।
खेलें निगलें जीव को, एक दूजे का काल।।४५।।

इस संसार में बड़े-बड़े मगरमच्छ हैं (रिश्तेदार, सगे सम्बन्धी धर्मों के आचार्य, इत्यादि) जो एक-दूसरे को अपने स्वार्थ के लिए खा रहे हैं।

ला मकान का सागर, लग तले तेहेतसरा।
ऐसे अंधेर अथाह बीच पैठ के, मोहे काढ़ी होए मरजिया।।४६।।

यह निराकार का मोह-सागर पाताल तक फैला है। ऐसे अन्धकार से भरे और गहरे सागर में श्री राजजी महाराज ने गोता लगाकर मुझे निकाला।

काढ़ के बूझ ऐसी दई, मोहे समझाई सब इत का।
बेसक का इलम दिया, जासों बैठी बीच बका।।४७।।

भवसागर से निकालकर मुझे यहां की कुल हकीकत समझाई और जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से मेरे संशय मिटा दिए जिससे मुझे प्रतीत हुआ कि मैं परमधाम में बैठी हूं।

ए सब किया हक ने, वास्ते इस्क के।
एक जरे जरा जो दुनीय में, जो विचार देखो तुम ए।।४८।।

श्री राजजी महाराज ने यह सब इश्क के वास्ते किया है। दुनियां का कण-कण सब इश्क के वास्ते बना है।

मैं कह्या नूरी अपना रसूल, तुम पर भेज्या फुरमान।
लिखी गुझ बातें दिल की, हाए हाए केहेवत यों सुभान।।४९।।

श्री राजजी महाराज ने कहा कि मैंने अपने नूर-रसूल को कुरान देकर तुम्हारे पास भेजा है। इस कुरान में मेरे दिल की छिपी बातों के रहस्य लिखे हैं।

लिखी अन्दर की इसारतें, और रमूजें जे।
कुन्जी भेजी हाथ रूहअल्ला, जाए दीजो अपनी अरवाहों को ए।।५०।।

कुरान में श्री राजजी महाराज के दिल के अन्दर की सारी बातें इशारतों और रमूजों में लिखी हैं। इनको खोलने की कुंजी तारतम वाणी श्री श्यामाजी के हाथ में देकर कहा कि यह अपनी रूहों को जाकर दे दो।

सो कुन्जी दई मुझ को, और खोलने की कल।
तिनसे ताले सब खुले, पाई आखिर अव्वल असल।।५१।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि वह कुंजी तारतम वाणी और खोलने की कला जागृत बुद्धि जिससे सारे ताले (छिपे रहस्य) खुल जाते हैं, मुझे लाकर दी। जिससे मुझे शुरू से आज तक की हकीकत का पता चला।

Nijanand App

और कोई न खोल सके, तीन सूरत का हाल।
फैल हाल दोऊ उमत के, तोको लिखिया नूरजमाल।। ५२ ।।

इस कुरान के छिपे भेदों के रहस्य को हुकम की तीन सूरतों (बसरी, मलकी और हकी) की हकीकत, ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि की करनी-रहनी की हकीकत मेरे बिना और कोई नहीं खोल सकेगा, ऐसा श्री राजजी महाराज ने कुरान में लिखा।

सुख देओ दोऊ उमत को, बीच बैठ नासूत।
चिन्हाए इस्क हक साहेबी, बुलाए ल्याओ लाहूत।। ५३ ।।

उन्होंने मुझे यह भी हुकम किया कि मृत्युलोक में बैठकर ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि दोनों जमातों को सुख दो और हक की साहिबी और इश्क की पहचान कराकर उन्हें परमधाम बुला लाओ।

इन विध सुख केते कहूं, झूठी इन जुबान।
मेरी रूह जाने या मोमिन, या दिए जिन रेहेमान।। ५४ ।।

इस तरह से कितने बेशुमार सुख दिए। इस झूठी जबान से कैसे कहूं? उन सुखों को मेरी आत्मा या मोमिन या देने वाले श्री राजजी महाराज जानते हैं।

दे आड़ो ब्रह्मांड सबन को, ढूंढ़ ढूंढ़ रहे सब दूर।
आगूं आए इलम दिया, जासों पोहोंची बका हजूर।। ५५ ।।

बाकी सब के आगे ब्रह्मांड में तन का परदा लगा है। सब निराकार में ही ढूंढ़-ढूंढ़कर दूर हो गये। अब श्री राजजी महाराज ने खुद आकर जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान दिया जिससे अखण्ड घर (परमधाम) में श्री राजजी के सामने पहुंच सकी।

केती कहूं मेहेर मेहेबूब की, जो रूहें देखो सहूर कर।
महामत कहे मेहेर अलेखे, जो देखो रूह की नजर।। ५६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी की मेहर का मैं कहां तक वर्णन करूं? उनकी मेहर बेशुमार है। यदि आत्मा की नजर से विचार करके देखो तो उनकी मेहर का वर्णन हो ही नहीं सकता।

|| प्रकरण || ८ || चौपाई || ३९८ ||

निसबत का प्रकरण

देख तूं निसबत अपनी, मेरी रूह तूं आंखां खोल।
तैं तेरे कानों सुने, हक बका के बोल।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरी आत्मा! तू अपनी आंख खोलकर अपने सम्बन्ध को पहचान। तूने श्री राजजी महाराज के वचनों को श्यामाजी (श्री देवचन्द्रजी) के द्वारा स्वयं अपने कानों से सुना है।

कौन जिमी में तूं खड़ी, कहां है तेरा वतन।
कौन खसम तेरी रूह का, कौन असल तेरा तन।। २ ।।

तू कौन सी जमीन पर यहां खड़ी है, तेरा घर कहां है, तेरी आत्मा का पति कौन है और तेरी परआतम कहां है?

Nijanand App